Volume-7, No. 2 Aug.-2020, pp. Hin.14-18

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का राजनीतिक सिद्धांतवादी एवं मानवता के पर्याय के रूप में एक मूल्यांकन

श्री अमित कुमार, शोध छात्र,
एस0डी0पी0जी0 कॉलेज, गाजियाबाद उत्तर–प्रदेश भारत
डा. जय कुमार सरोहा, शोध निर्देशक एवं सह आचार्य
राजनीति विज्ञान विभाग
एस0डी0पी0जी0 कॉलेज, गाजियाबाद उत्तर–प्रदेश भारत।

सारांश

राष्ट्रीय या राष्ट्रवाद मानव के शुरुआती सामूहिक जीवन में जीवन जीने की राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं नैतिक आचरण की संरचना सुरक्षा एवं संरक्षण का आधार माना गया है। जिसे समय परिवर्तन के बाद राष्ट्र व राज्य के रूप में सुनिश्चित करते हुए देश की निश्चित भौगोलिक संरचना के अंदर भाषा जाति धर्म नस्ल की विविधता के बावजूद राष्ट्र के संदर्भ में एकरूपता को सुनिश्चित करना राष्ट्रवाद की नई परिभाषा है। साथ ही राष्ट्रवाद को अनेक घटनाओं के क्रमानुसार कभी फासीवाद पूंजीवाद उदारवाद आदि की संप्रभुता के आधार पर परिभाषित किया गया। भारत के राष्ट्रवाद के संदर्भ में बुनियादी तौर पर दो चरण दिखाई पड़ते हैं जिसमें प्रथम 1947 से पूर्व का राष्ट्रवाद जो स्वतंत्रता एवं स्वराज के आधार पर निश्चित हुआ वहीं 1947 के बाद राष्ट्रहित एवं राष्ट्र की संप्रभुता एवं एकता के संदर्भ में सुनिश्चित हुआ। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के राजनीतिक जीवन के कालखंड में राष्ट्र की अवधारणा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और गुवाहाटी से लेकर गुजरात तक एक थी। उनका मानना था कि भारत की भौगोलिक संरचनाओं के अंदर भाषा जाति नस्ल धर्म आदि की एकरूपता एवं राष्ट्र की संप्रभुता दोनों की सुनिश्चित परिभाषा व संरक्षण हो। जिस के संदर्भ में उन्होंने उच्च शिक्षा में कुलपति जैसे पद से अवकाश लेकर तत्कालीन परिस्थितियों में राजनीतिक माध्यम से देश की सेवा एवं राष्ट्रवाद की संप्रभुता को सुनिश्चित करने का प्रण लिया। और अपने अंतिम समय तक जम्मू एवं कश्मीर राज्य के विवादित मुद्दे पर उन्होंने 'दो निशान दो विधान' सिद्धांत को नकारते हुए, भारतीय एवं भारतीयों के लिए भारत की सुनिश्चित के लिए संघर्ष करते रहे। अतः किसी देश व किसी राज्य के राष्ट्रवाद को राजनीतिक एवं मानवीय दृष्टिकोण से सुनिश्चित करना एक चुनौती एवं संघर्षपूर्ण अवधी है जिसे डॉ श्यामा प्रसाद जैसे अनेक भारतीयों ने अपने प्राण की आहुति देकर इस देश की संप्रभुता स्वतंत्र एवं बंधुता को सुनिश्चित किया है।

मुख्य शब्द– डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, राजनीतिक सिद्वान्त, मानवता

प्रस्तावना

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म कोलकाता के एक प्रतिष्ठित परिवार में जुलाई माह के 6 दिवस को 1901 में हुआ था। उनका परिवार शिक्षा का धनी था, उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी एक स्वयं शिक्षा विद्व है, जिनके मार्गदर्शन में डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अल्पायु में ही सामाजिक राजनीतिक एवं शिक्षा की अन्य मांगों पर अपनी सफलताएं अर्जित की। उनके पिता आशुतोष मुखर्जी कोलकाता विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति थे। उनके देहान्त के बाद 23 वर्ष की अल्पायु में श्यामा प्रसाद मुखर्जी को विश्वविद्यालय की प्रबंध समिति में चयनित किया गया और 33 वर्ष की उम्र में कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त होने पर उन्होंने विश्व भर में इतनी कम आयु में कुलपति होने का गौरव प्राप्त किया। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का एम. ए. की परीक्षा के दौरान विवाह संपन्न हुआ जिससे उन्हें चार संतानें प्राप्त हुई और 1934 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पत्नी का देहांत हो गया। अतः डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का गृहस्थ जीवन आंशिक रूप से समाप्त हो गया। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारत में उपनिवेश शोषण काल के विरूद्ध हो रहे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में एवं भारतीय राजनीतिक भागीदारी के रूप में एक विचारक प्रखर शिक्षाविद के रूप में सामने आए। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी जीवन की शुरूआती दौर से ही अध्यात्म और विज्ञान से युक्त शिक्षा की गुणवत्ता एवं इस ज्ञान के व्यापक परिणामों को निरंतर वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाते रहे। इसी अभिव्यक्ति एवं ज्ञान के लिए मार्गदर्शन से डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन में आध्यात्मवाद सहनशीलता मानवीय धर्म वैज्ञानिक दूर दृष्टि एवं

समाज व राजनीति के मुद्दों पर गहरी समझ का समन्वय स्थापित कर लिया।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी की शिक्षा के संदर्भ में, उन्होंने 16 वर्ष की अल्पायु में मित्र इंस्टीट्यूट से मैट्रिक्स की परीक्षा उत्तीर्ण कर छात्रवृत्ति प्राप्त की और तत्कालीन समय के प्रसिद्ध प्रेसीडेंसी कॉलेज कोलकाता में उच्चतर शिक्षा के लिए प्रवेश किया। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वर्ष 1919 में इंटर आर्ट्स की परीक्षा में विश्वविद्यालय के स्तर पर विशिष्ट स्थान प्राप्त किया और 1921 में बीए ऑनर्स अंग्रेजी विषय में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की और 1923 में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और श्यामा प्रसाद मुखर्जी गृहस्थी जीवन एवं स्वाध्याय में संलग्न हो गए। हालांकि 1924 में बी.एल. की परीक्षा उत्तीर्ण की और डिलीट और एलएलबी की उपाधि हासिल की जिसके परिणामस्वरूप 1926 में लिंकन सन इंग्लैंड में कार्य करने लगे किन्तु 1927 में इन्हें इंग्लिश बार में बुला लिया गया परंतु वकालत में रूचि न होने के कारण उन्होंने वकालत के पेशे से दूरी बना ली। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इंग्लैंड में रहते हुए बेटी साम्राज्य के विश्वविद्यालयों की सेमिनार संगोष्ठी एवं अन्य सम्मेलनों में कोलकाता विश्वविद्यालय का क्षमता व कौशलता के शैक्षणिक ज्ञान के साथ प्रतिनिधित्व किया जिसके फलस्वरूप उनकी गिनती भारत के शिक्षाविदों में होने लगी। अतः श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक विचारक एवं प्रखर शिक्षाविद के रूप में उपलब्धियां एवं ख्याति स्वतंत्रता के बाद भी दशकों तक देश के राजनीतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक समुदाय को पल्लवित करती रहीं।

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं स्वतंत्रता से पूर्व राजनीतिक क्रिया के लाभ

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी अल्प आयु में शिक्षा की उपधि एवं शिक्षण संस्थानों में उच्चतम प्रशासनिक पद कुलपति तक पहुंचने के बाद उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार भारत की राष्ट्रीय राजनीति में स्वेच्छा से प्रवेश किया। जिसमें श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपने राजनीतिक क्रियाकलापों को मानवता केंद्रित राजनीतिक दृष्टिकोण के उपासक एवं सिद्धांतवादी राजनीतिक नेतृत्व एवं भारतीय राष्ट्रीय राजनीति के वाहक के रूप में संचालित किया। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के शुरूआती राजनीतिक जीवन में उन्होंने गैर कांग्रेसी हिंदुओं की मदद से कृषक प्रजा पार्टी से मिलकर प्रगतिशील संगठन का गठन किया। इस सरकार में वे वित मंत्री बनें। यह वही समय था जब सावरकर का भारत में उदय हो रहा था। उन्हीं के प्रभाव के चलते डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी सावरकर के राष्ट्रवाद एवं हिंदू महासभा की विचारधारा की ओर आकर्षित हुए। 1920 के बाद भारतीय राजनीति के शिशु काल में शुरू हुई संप्रदायिक एवं धर्म से संलग्न राजनीति ने बंगाल के राजनीतिक वातावरण को भी दूषित कर दिया जिसमें मुस्लिम लीग की मुस्लिम संप्रदाय पर आधारित बंगाल की राजनीति संप्रदाय एवं सांस्कृतिक की एकरुपता खतरे में पड़ने लगी जिसके परिणामस्वरूप आगे चलकर यही संप्रदाय के विभाजन के बाद नवराष्ट्र के रूप में गठित हुए। 1940 की तत्कालीन परिस्थितियों में संप्रदायिक लोगों को ब्रिटिश सरकार द्वारा पोषित किया गया जिसमें डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे राजनीतिक विद्वानों ने बंगाल में हो रहे हिन्दुओं के साथ शोषण एवं दोयम दर्जे के व्यवहार की उपेक्षा न होने का बीड़ा उठाया। उन्होंने अपनी राजनीतिक विशेषता के कारण बंगाल के विभाजन में मुस्लिम लीग एवं संप्रदायिक ताकतों के प्रयासों को पूरी तरीके से विफल कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप 1942 में ब्रिटिश सरकारी ने डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी सहित विभिन्न राजनीतिक दलों के छोटे बड़े नेतृत्व को कारागार में डाल दिया। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय उपमहाद्वीप में भारतीय संस्कृति का समर्थन करते थे जिसमें उन्होंने राजनीतिक षड्यंत्रों के खिलाफ जाकर सार्वजनिक रूप से स्पष्ट करने का प्रयास किया कि भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न धर्मों भाषा नस्ल की विविधता होने के कारण यहां सांस्कृतिक एकता समस्त जन समुदाय को एकजुट किए हुए हैं। किन्तु उनका मानना था कि राजनीतिक एवं तत्कालीन क्षणिक लाभों के लिए लोगों ने भारतीय उपमहाद्वीप की जनता में संप्रदाय जाति नस्ल का जहर घोल दिया है। अतः डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का मानना था कि यह आधारभूत सत्य है कि हम सब एक हैं हमें कोई अंतर नहीं है वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर हमारा रक्त भी एक है और भाषा व संस्कृति की एकरुपता हमारी विरासत है। किंतु भारतीय राजनीति में पैदा हुआ संप्रदायिक संघर्ष तत्कालीन परिस्थितियों में एक चुनौती बन गयी जिसके परिणामस्वरूप अलग राष्ट्र की अवधारणाा की जिद पर अगस्त 1946 में मुस्लिम लीग ने विद्रोह जंग का सहारा लिया जिसके परिणामस्वरूप कोलकाता और लाहौर जैसी सभ्यता व संस्कृति की विरासत शहरों में भयंकर बर्बरता नरसंहार हुआ।

राजनीतिक पार्टी का गठन एवं केन्द्रीय राजनीति में भागीदारी

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी अपनी अद्वितीय ज्ञान की कुशलता एवं भारतीय संस्कृति के संरक्षण के तौर पर तत्कालीन परिस्थितियों में प्रमुख राजनीतिक एवं

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख नेतृत्वकर्ता थे। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक एकता, अखंडता को सुरक्षित रखने के लिए जीवन पर्यन्त लड़ते रहे। जिनका मानना था कि सिंध से कन्याकुमारी और गुवाहटी से कराची तक सभी भारतीयों में एक रक्त एक संस्कृति एक मूल भाषा है। अंत में उन्होंने आर्य संस्कृति को संदर्भित करते हुये समस्त भारतवर्ष की सांस्कृतिक विशेषता को प्रदर्शित करते हुये भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक एकता व अखंडता को बचाने का प्रयास किया। 1940 के दशक में अगस्ता आंदोलन से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने बंगाली संस्कृति एवं बंगाली विभाजन के विरुद्ध लोगों में सांप्रदायिक सौहार्द एवं सहयोग को संरक्षित करने का भरसक प्रयास किया, जिसका परिणाम बंगाल और पंजाब के विभाजन की मांग उठाकर मुस्लिम लीग के प्रस्तावित पाकिस्तान का उनका विरोध प्रदर्शन सुनिश्चित करता है। यही विरोध का प्रमुख कारण था जिसके फलस्वरूप आधा बंगाल आधा पंजाब खंडित भारत में बचे रह गए। संविधान सभा में अधिकारों, कर्तव्य एवं संविधान निर्माण की दशा व दिशा पर विचार अभिव्यक्ति से उन्होंने भारतवर्ष में समस्त शीर्ष नेतृत्व को प्रभावित किया जिसके फलस्वरूप महात्मा गांधी एवं सरदार पटेल के अनुरोध पर उन्हें भारत के पहले अंतरिम मंत्रिमंडल में शामिल किया गया। मंत्रिमंडल में उन्हें उद्योग जगत जैसे महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी दी गई। संविधान सभा एवं प्रांत के संसदीय सदस्य होने के साथ–साथ केंद्रिय अंतरिम मंत्री होने के नाते उन्होंने जल्द ही भारत की केन्द्रीय राजनीति में अपना विशिष्ट स्थान हासिल कर लिया। जिसके फलस्वरूप उन्होंने भारत के तत्कालीन चुनौतीपूर्ण मुद्दों को अपनी प्रखरता एवं राजनीतिक सूझबूझ के साथ देश के पटल पर रखा और अपनी विचार अभिव्यक्ति में राष्ट्रवाद चिंतन की विशेषता होने के कारण अनेक बार उनका तत्कालीन राजनेताओं के साथ मतभेद बना रहा। फलतः राष्ट्रीय हित एवं राष्ट्रवाद की सर्वोपरि मुद्दों के प्रति प्रतिबद्ध होने के कारण एवं राष्ट्रहित में कार्य संगति ना होने के कारण उन्होंने संसदीय केन्द्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया और नए दल के रूप में अक्टूबर 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना की। भारतीय जनसंघ ही भारतीय लोकतंत्र में विपक्ष के तौर पर एक अंबेला पार्टी के रूप में 1977 में देश की राष्ट्रीय राजधानी में अवतरित हुई जिसे बाद में 1980 के दशक में भारतीय जनता पार्टी के नाम व संगठन के स्वरूप में बदल दिया गया। भारतीय जनता पार्टी ने 1980 में 1990 के दशक के अंतिम वर्षों में अपनी सहयोगी पार्टियों के सहयोग से गठित किए गए राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन के अंतर्गत केन्द्रीय सत्ता का गठन किया और 21वीं शताब्दी के दूसरे दशक में 2014 से निरंतर भारतीय जनता पार्टी अपने गठबंधन राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन के अन्तर्गत शासन सत्ता का संचालन कौशल एवं गठनबंधन की नैतिकता के अंतर्गत सुचारू रूप से शासित किया जा रहा है। भारतीय जनता पार्टी में आज भी डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के मानवता एवं नैतिकता के सिद्धांतवादी दृष्टिकोण का निर्वाहन किया जा रहा है साथ ही डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के राष्ट्रीयवादी एवं भारतीय संस्कृति की एकता पर आधारित जनता का सामूहिक मार्गदर्शन एवं भारतीय की सांस्कृतिक विविधता में एकता को भी सुचारू रूप से वर्तमान परिस्थितियों में संचालित किया जा रहा है। अतः 1950 के दशक में डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा राष्ट्रहित एवं राष्ट्रवाद की वरीयता के आधार पर गठित किए गए। जनसंघ पार्टी का वर्तमान परिस्थितियों में भी राष्ट्रीयवाद एवं राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि सर्वोच्चता के आधार पर निवर्हन किया जा रहा है।

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी और तत्कालीन परिस्थितियां

1947 में सैंकड़ों वर्षों की गुलामी एवं उपनिवेश शोषण कार्य राज्य व्यवस्था से स्वतंत्रता का आनंद एवं समकालीन परिस्थितियों में भारत की भौगोलिक सीमा का विभाजन दोनों भारतीय समुदाय को साथ–साथ देखने पड़े जिसके परिणामस्वरूप दिल्ली और कराची जैसे शहरों में जहां स्वतंत्र दिवस का उल्लास था वहीं बंगाल और पंजाब की सीमा पर मानवता की हानि एवं सदी का सबसे बड़ा मानव विस्थापन हो रहा था। साथ ही भारत में एक और समस्या ने जन्म लिया जो जम्मू कश्मीर के विलय के संदर्भ में था क्योंकि अपोलो ऑपरेशन एवं अन्य कूट नीतियों के माध्यम से तत्कालीन गृहमंत्री एवं तत्कालीन गृह सचिव ने भारत के राज्य रजवाड़ों को भारतीय संप्रभु राष्ट्र में विलय करवा लिया था किंतु जम्मू एवं कश्मीर जहां हिंदू राजा का अधिकांश प्रजा मुस्लिम एवं अल्पसंख्यक समुदाय में हिंदू सिख आदि पर शासन था। अधिकांश प्रजा के मुस्लिम होने के कारण नवगठित हुए पाकिस्तान में अप्रत्यक्ष कूटनीति व आतंक के माध्यम से जम्मू एवं कश्मीर के भौगोलिक क्षेत्र को पाकिस्तान में मिलाने का षड्यत्र किया क्योंकि तत्कालीन जम्मू एवं कश्मीर पर शासित राजा को भारत में विलय के लिए सहयोग व सम्मान के साथ समझौते के लिए भारत सरकार ने अनेक प्रस्ताव प्रस्तावित किए किंतु राजनीतिक आकांक्षा एवं अलग

संप्रभु राज्य की अपेक्षा ने महाराजा हरिसिंह को स्वतंत्र रहने की जिज्ञासा से महाराज की दूर दृष्टिता प्रासंगिक नहीं हुई क्योंकि पाकिस्तान ने जम्मू एवं कश्मीर को हड़पने के लिए षड्यंत्र कर दिया जिसके फलस्वरूप नवगठित दो संप्रभु राज्यों के बीच उपमहाद्वीप में युद्ध हो गया। युद्ध की परिस्थितियों में जम्मू कश्मीर के महारजा हरि सिंह ने भारत में विलय होने के समझौते पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए किंतु तब तक देर हो चुकी थी पाकिस्तान लगभग एक तिहाई जम्मू एवं कश्मीर के हिस्से पर अवैध कब्जा कर चुका था। साथ ही भारत में राजनीतिक उठापटक एवं अल्प राजनीतिक ज्ञान की परिपक्वता के कारण तत्कालीन संसदीय समिति ने जम्मू कश्मीर को धारा 370 के अंतर्गत भारतीय संविधान में विशेष दर्जा प्राप्त कराया। जिसमें कुछ विशेष प्रावधान भी निश्चित किए गए जैसे कि जम्मू कश्मीर को अलग झंडा अलग संविधान और अलग प्रधानमंत्री के तौर पर राजनीतिक मुखिया की उपलब्धता सुनिश्चित की गई जिसका राष्ट्रीयवादी एवं राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखने वाले राजनीतिक दल एवं राजनीतिक नेतृत्व में घोर आलोचना की जिसे डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने संसद में अपने भाषण में धारा 370 के खत्म करने एवं एक देश में दो विधान दो निशान की समाप्ति का पुरजोर विरोध किया। तत्कालीन केन्द्रीय संसदीय राजनीतिक में जम्मू एवं कश्मीर जैसे राजनीतिक इच्छाओं के अभाव के कारण ही डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने तत्कालीन कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया और देश के राष्ट्रीय हितों को लेकर उन्होंने विशाल जन सभाओं, रैली एवं जागरूकता अभियान चलाया। जिसके फलस्वरूप में ''दो निशाने दो विधान'' की समाप्ति के संदर्भ में एक विशाल रैली के आयोजन के संकल्प के साथ जम्मू कुच किया। जम्मू में आयोजित की गई विशाल जन रैली में उन्होंने कहा था कि ''मैं जम्मू एवं कश्मीर की जनता को भारतीय संविधान प्राप्त कर आऊंगा या फिर इसी उद्देश्य की पूर्ति के किलए अपना जीवन बलिदान कर दूंगा''।

संक्षिप्त राजनीतिक परिचय

- 1929 में बंगाल विधानसभा परिषद् के कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जीता
- स्वतंत्र उम्मीदवार के तौर पर स्थिति के बाद चुनाव जीता
- 1941 से 1942 तक बंगाल के वित्त मंत्री के तौर पर काम किया
- सन् 1937 से 1941 के बीच विपक्ष के नेता के तौर पर राजनीतिक जीवन
- 1944 में हिंदू महासभा के अध्यक्ष
- संविधान सभा के सदस्य
- प्रथम अंतरिम सरकार की कैबिनेट में मंत्री
- 1950 में नेहरू लियाकत समझौता के विरोध में मंत्रिमंडल से इस्तीफा
- 1951 में जनसंघ का उद्भव
- 1952 में आम चुनाव में भागीदारी और तीन संसदीय क्षेत्रों में विजय प्राप्त की।

निष्कर्ष

डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के राष्ट्रीय दर्शन में राष्ट्रवाद की भावना व्याप्त थी। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अखण्डता बनाये रखने के लिए प्रयासरत रहे। राष्ट्र के एकीकरण में रूस की नीति को डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी पसंद करते थे। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी भाषा सहित क्षेत्रीय भाषा पर जोर दिया क्योंकि उनका मानना था कि क्षेत्रीय भाषा का भी विकास महत्वपूर्ण है। शिक्षा नीति को विकसित करने के लिये क्षेत्रीय भाषा होना आवश्यक है। भाषा के इस विचार को रखते हुये डॉ0 मुखर्जी ने कहा कि राष्ट्र की एक भाषा होनी चाहिए। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी क्रान्तिकारियों के प्रति पूर्ण भक्ति भाव रखते थे अर्थात् डॉ0 मुखर्जी राष्ट्रवादी भावनाओं से ओतप्रोत थे। डॉ0 मुखर्जी के प्रयत्न में स्वराज प्राप्ति में पूर्ण सफलता मिली जो देश के नवयुवकों में उत्साह, स्फूर्ति और देशभक्ति की भावना जागृत हुई। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में इनका भी एक सम्मानीय स्थान था। देश के लिए निर्भीकता का पाठ जो इन लोगों ने पढ़ाया है, वह अहिंसावाद नहीं पढ़ा सकता। अहिंसावाद में ढोंग और धोखाधड़ी आ जाना स्वाभाविक है, परन्तु क्रान्तिकारी दल के लोगों को सदा जान हथेली पर रखकर ही कार्य करना पड़ता था। जब कोई क्रांतिकारी सफल हो जाता तो जहां देश भर के लोगों में उत्साह की भावना दौड़ जाती थी, वहां विदेशी नृशंस शासकों के दिल दहल उठते थे। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचारों में जहां शिक्षा को बढ़ाने के लिए भाषा की महत्वता को बताया। आधुनिक भारत की अखण्डता के लिए डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का भाषा एकीकरण का सिद्धान्त महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- तथागत राय, अप्रतिम नायक डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2013
- तथागत रायख ए सप्रेस्ड चैप्टर इन हिस्ट्री, दिल्ली, 2007

- श्री गुरूदत्त, डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी की अन्तिम यात्रा, हिन्दी साहित्य सदन करोलबाग, दिल्ली
- श्री गुरूदत्त, धर्म संस्कृति और राज्य, हिन्दी साहित्य सदन करोलबाग, नई दिल्ली
- शंकर सुल्तानपुरी, क्रान्तिकारी आजाद, हिन्दी साहित्य सदन करोलबाग, नई दिल्ली
- प्रकाशवीर शास्त्री, कश्मीर की वेदी पर, डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी, शोध अधिष्ठान, नई दिल्ली
- मनोज कुमार दास, डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी– ऐ प्योर एण्ड मेनली लाईफ, डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान, नई दिल्ली
- पं0 दीनदयाल उपाध्याय, ''अखण्ड भारत क्यों'' लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ, 1972
- जगदीश प्रसाद माथुर, ''जनसंघ के मूल विचारक पं0 दीनदयाल उपाध्याय'', शोध संस्थान, नई दिल्ली, 1991
- दंत्तोपंत, ठेंगड़ी, ''पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन (खण्ड–1) सुरूचित प्रकाशन, झण्डेवालान, नई दिल्ली, 1991
- पं0 दीनदयाल उपाध्याय, ''पॉलिटिक डायरी'', हिन्दी जायको पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, 1968